लोकपक्ष अंक 27 मई 2024

## 1. लोकसभा चुनाव : 2024

भारतीय लोकसभा के लिए आम चुनाव शुरू हो चूका है| 19 अप्रैल से 01 जून तक चलने वाला, 7 किस्तों में, यह काफी लम्बा और उबाने वाला प्रक्रिया है और अंत में 04 जून, 2024 को मतों का गणना होगा और भारतीय "प्रजातंत्र पर मुहर लगेगा| चुनाव में 543 सदस्य चुने जायेंगे| दावा है कि यह प्रक्रिया विश्व में सबसे बड़ा है और सबसे बड़े प्रजातान्त्रिक देश होने का दावा करता है, क्यूंकि चीन को प्रजातान्त्रिक देश नहीं माना जाता है|

ध्यान देने योग्य बात यह है कि आज का चुनावी माहौल कहीं से भी एक सभ्य समाज का नहीं है, प्रजन्त्रिक होने की कल्पना वहीँ कर सकते हैं जो अज्ञानी और अन्धविश्वासी हैं| इस चुनाव में पूंजी का "निवेश" वीभत्स रूप से भयानक हो चूका है (पहले भी होता रहा है, पर आज उससे कई गुना ज्यादा है)| उसी अनुपात में झूठा प्रचार व्यभिचार के हद तक, बेईमानी और अनैतिकता का हर स्तर को पार कर रहे हैं राजनितिक दल, खासकर वह जो सत्ता में है| राज्य का हर अंग, संवैधानिक हो या और, सत्ता पक्ष को जिताने में जी जान लगा रहा है|

वैसे, लोकपक्ष पत्रिका में "चुनाव से चुनाव" तक की राजनीती पर चर्चा की गयी है और अन्दुरुनी बहस भी किया जाता रहा है| अन्य समान विचारधारा वाले राजनितिक दलों, संगठनों (लोकपक्ष एक संगठन है), समूहों से समय-समय पर चर्चा की जाती है और कोशिश होती है इस प्रक्रिया को समझने की| और जानने की कोशिश करते हैं इसका असर पूंजीवादी तंत्र में और मिहनतकाश जनता पर किस हद तक है और इसका इसतेमाल किस तरह किया जा सकता है मजदूर वर्ग और प्रताड़ित जनता को शिक्षित करने और संघर्ष के लिए तैयार करने में| इस प्रक्रिया में जन मानस का भी अध्ययन किया जाता है, उन्हें शिक्षित करने और खुद शिक्षित होने की प्रक्रिया भी जारी रहता है|

2014, 2019 और अब के चुनाव में पहले से कुछ मूल-भूत परिवर्तन दिखे हैं| फासीवादी सत्ता के स्थापित होने के बाद उसका शिकंजा सरकारी तंत्र (पुलिस, प्रशासन, खुफिया विभाग, आदि), मिडिया (वैसे भी पहले कॉपोरेट के अधीन ही थे), सोशल मिडिया, न्यायलय, सेना, पर मजबूत होता जा रहा है| संविधान का इस्तेमाल ख़ास पूंजीपति वर्ग के लिए किया जा रहा है| संविधान, वैसे भी, पूंजी के हक़ में ही था, और यह बात स्पष्ट भी किया गया गया है उच्चतम न्यायलय द्वारा समय-समय पर| उच्चतम न्यायलय ने भी चुनावी प्रक्रिया को पारदर्शी करने से इनकार कर दिया और 100% पर्ची मिलान की सारी याचिकाएं खारिज कर दी और भाजपा की सरकार के पक्ष में ही फैसला दिया।

एक सवाल अहम् है| क्या आज हम, क्रांतिकारी संगठन या दल, समर्थ हैं “चुनाव से चुनाव” तक की राजनीती का उपयोग करने में, जिसकी चर्चा ऊपर की गयी है? यह अगले प्रश्न की तरह ही महत्वपूर्ण है, क्या चुनाव के द्वारा हम फासीवाद को हरा सकते हैं या पूंजीवाद को समाजवाद में तब्दील कर सकते हैं? पहला और अंतिम प्रश्न का जवाब हैं, नहीं| पर सवाल उठते हैं दुसरे प्रश्न पर, क्या चुनावी प्रक्रिया से हम फासीवाद को हरा सकते हैं या कुछ कमजोड कर सकते हैं? यदि भाजपा और सहयोगी दल (NDA) इस चुनाव में हार जाते हैं तो क्या फासीवाद कमजोड पड़ जायेगा या हार जायेगा? मतलब, कौंग्रेस और सहयोगी दल (INDIA) फासीवादी सत्ता द्वारा किया गए कार्यों को ख़त्म कर देंगे? वैसे 2014 के पहले कौंग्रेस और सहयोगी दलों ने भारत में जनतंत्र लाने की कोई भी कोशिश नहीं की और पूंजीवाद को ही कज्बूत करते रहे| उन्हीं के द्वारा लाये गए संविधान और उसमें किये गए संशोधन के आधार पर भाजपा सरकार ने आज भारतीय जनमानस और वस्तु स्थिति की ये हालत की है|

खैर, पूर्णता में आज की आर्थिक, राजनितिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परिस्थियों के विश्लेषण पर यह स्पष्ट है कि हम जो भी करें उसका लक्ष्य सर्वहारा क्रांति ही हो| लक्ष्य के हिसाब से ही कार्यक्रम बने| हाँ, आज की परिस्थितियों का कार्यक्रम का जरुर हस्तक्षेप होगा| हम कोई भी राजनितिक काम वर्गीय हित को ध्यान में रख कर करें, यानि मजदूर वर्ग और प्रताड़ित जनता के हित में काम करें जिसका लक्ष सर्वहारा क्रांति हो, यानि पूंजीवाद को दफ़न कर समाजवाद की स्थापना हो, मजदूर वर्ग (अपने दल के द्वारा) के नेत्रित्व में सत्ता स्थापित हो|

## 2. संघर्ष और एकता का प्रतीक: मई दिवस का इतिहास और महत्व

## संघर्ष और एकता का प्रतीक: मई दिवस का इतिहास और महत्व

मई दिवस का जन्म मजदूरों के काम के घंटे कम करवाने की लड़ाई से जुड़ा है, जो पूंजीवाद के श्रम के शोषण पर टिकी व्यवस्था होने के कारण एक राजनैतिक मुद्दा भी है। ये संघर्ष उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में अमेरिका में कारखाने लगाए

जाने के साथ ही उभरा। अब मशीन 24 घंटे चलती थी, और मालिक चाहते की मजदूर भी वैसे ही चलें। दिहाड़ी बढ़ाने की मांग एक बात थी, लेकिन शुरुआत से ही अमेरिका के मजदूरों के लिए काम के घंटों का प्रश्न और यूनियन बनाने का अधिकार ज्यादा महत्वपूर्ण रहे। काम के घंटे के प्रश्न का संबंध सीधे तौर पर शोषण से है। महीने की पगार तो तय (fixed) है, अब मालिक की चाहत तो ये है की मजदूर सोते-जागते, दिन-रात उसकी तनख्वाह का दाम चुकाए। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत के अमेरिका में चौदह, सोलह, और यहाँ तक की अठारह घंटे की शिफ्ट करवाना आम बात थी। धीरे-धीरे जब मजदूर संगठित होने लगे, तो दस घंटे काम करने की मांग उठी, और इस मांग को लेकर कई हड़तालें भी हुई। 1827 में फिलाडेल्फ़िया के मकैनिक्स यूनियन ने, जिसे दुनिया का पहला ट्रेड यूनियन माना जा सकता है, शहर-शहर दिन के दस घंटे काम की मांग को लेकर हड़तालें करवाने लगा। और जल्द ही इस मांग ने एक आंदोलन का रूप ले लिया, जिसके दबाव में 1840 में ये निर्णय ले लिया की (federal) यानी अमेरिका की सेंट्रल गवर्नमेंट योजना (scheme) में 10 घंटे से अधिक काम नहीं लिया जाएगा। लेकिन अधिकांश मजदूर जाहिर तौर पर इस कानून के दायरे से बाहर ही रहे। मजदूर यूनियन

राजनैतिक तौर पर आगे ही देखने के आदि थे। जैसे ही दस घंटे काम की मांग पूरी हुई, उन्होंने दिन के आठ घंटे काम की मांग उठानी शुरू कर दी। अगले कई दशकों तक अमेरिका के कल कारखाने मजदूरों के काम के घंटे कम करवाने के संघर्ष की चिंगारी से धधकते रहे। 1884 में एक बार फिर दिन के आठ घंटे काम की माँग को लेकर एक व्यापक आंदोलन भड़क उठा। अबकी बार जंगी मजदूरों के संगठन पहले से कहीं बड़े, मजबूत और राजनैतिक रूप से तैयार थे। इनमें से कई ने अखिल राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर लिया था। एकता और गठजोड़ की बात सब कर रहे थे। 1866 में बाल्टीमोर में तीन बड़ी ट्रैड यूनियनों ने मिलकर एक राष्ट्रीय श्रम संघ की नींव रखी। आंदोलन के नेता थे विलियम एच सिल्विस। इनकी अगुवाई में इस नए बने अमेरिका के राष्ट्रीय श्रम संघ ने लंदन में स्थित फर्स्ट इंटरनॅशनल (international) के मुख्यालय (headquarter) से संपर्क स्थापित किया। फर्स्ट इंटरनेशनल मजदूरों की मुक्ति की कामना रखने वाला अंतरराष्ट्रीय संगठन था, हालांकि इसका अधिक फैलाव तब पश्चिमी यूरोप के औद्योगिक क्षेत्रों तक सीमित था।

1866 में राष्ट्रीय श्रम संघ के सम्मेलन ने प्रस्ताव पारित किया: "इस देश के मजदूरों को पूंजीवादी गुलामी से मुक्त करने के लिए वर्तमान की पहली और सबसे बड़ी आवश्यकता है एक कानून -जिसके द्वारा अमेरिकी संघ के सभी राज्यों में कार्य दिवस 8 घंटों का हो। हम इस शानदार लक्ष्य को प्राप्त कर लेने तक अपनी पूरी ताकत लगाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।" इसके कुछ महीनों बाद सितंबर 1866 में फर्स्ट इंटरनेशनल ने भी इस प्रस्ताव को इन शब्दों के साथ अपना लिया,

"काम के दिन की कानूनी सीमा एक प्रारंभिक शर्त है जिसके बिना मजदूर वर्ग के सुधार और मुक्ति के सभी प्रयास व्यर्थ साबित होंगे।"

आठ घंटे के आंदोलन पर मार्क्स की टिप्पणी:

कार्ल मार्क्स ने अपनी किताब 'दास कैपिटल' में एक खास बात उठाई थी। 1867 में छपी इस किताब के 'द वर्किंग डे' नाम के चैप्टर में, मार्क्स ने बताया कि अमेरिका में मजदूरों ने कैसे आठ घंटे काम करने की मांग को लेकर एकता दिखाई। उन्होंने खासतौर पर उस हिस्से का जिक्र किया जहां काले और गोरे मजदूरों ने मिलकर इस मुद्दे पर एकजुटता दिखाई। मार्क्स ने लिखा कि जब

तक अमेरिका में गुलामी थी, तब तक कोई भी मजदूर आंदोलन सफल नहीं हो सकता था। एक गोरे आदमी का काम तब तक आजाद नहीं हो सकता था, जब तक काले आदमी का काम गुलाम था। लेकिन जब गुलामी खत्म हुई, तो एक नई शक्ति और ऊर्जा ने जन्म लिया। अमेरिकी गृहयुद्ध के बाद, आठ घंटे काम करने की मांग के लिए एक नया आंदोलन शुरू हुआ, जो पूरे देश में फैल गया। मार्क्स आगे लिखते हैं कि बाल्टीमोर में एक श्रमिक सम्मेलन और जिनेवा में एक अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस ने लगभग एक ही समय में, बस दो हफ्ते के अंतर पर, आठ घंटे के काम के दिन के लिए वोट किया। इससे ये साफ हो गया कि दुनिया भर के मजदूर एक जैसी सोच रखते हैं और वे अपने काम के घंटों को सीमित करने के लिए एक साथ आने को आतुर हैं। जिनेवा कांग्रेस का फैसला अमेरिकी फैसले से प्रेरित था, और इसे दुनिया भर के मजदूरों ने एक सामान्य मांग के रूप में अपनाया।

अमेरिका में मई दिवस की शुरुआत

मई दिवस, जिसे हम लेबर डे भी कहते हैं, वो असल में अमेरिका से शुरू हुआ था। 1872 में पहला अंतर्राष्ट्रीय (First International) का मुख्यालय लंदन से न्यूयॉर्क ले जाया गया और फिर 1876 में उसे खत्म कर दिया गया। एक लंबे समय से इस संगठन ने अपना क्रांतिकारी चरित्र खो दिया था और लड़ाकू मजदूर संगठन एक नए क्रांतिकारी संगठन की जरूरत महसूस कर रहे थे। इसलिए 1889 में पेरिस में एक नया संगठन बना, जिसे दूसरा अंतर्राष्ट्रीय (Second International) कहा गया। इसी संगठन ने मई दिवस को एक खास दिन के रूप में मनाने का फैसला किया, जिस दिन दुनिया भर के मजदूर एक साथ मिलकर आठ घंटे के दिन के लिए लड़ेंगे।

1884 में, इस संगठन ने एक बैठक में आठ घंटे का कार्यदिवस के कानून को लागू करवाने के लिए संघर्ष करने का फैसला कर लिया। सदस्यों को सलाह दी गई कि वे लंबी लड़ाई लिए तैयार रहें और जरूरत पड़ने पर हड़ताल भी करें। यह हड़ताल राष्ट्रीय स्तर पर होनी थी और इसमें देश भर के संबद्ध संगठन शामिल

होने थे। इस तरह से मई दिवस की शुरुआत हुई और यह दिन मजदूरों के अधिकारों के लिए लड़ाई का प्रतीक बन गया।

पहली मई दिवस हड़ताल की तैयारी

1880-1890 के दशक में अमेरिका में उद्योग धंधे खूब फले-फूले, लेकिन 1883-1885 के बीच एक बड़ी मंदी आई। ऐसी ही एक मंदी 1873 में भी आई थी। ऐसे में छोटे काम के दिन की मांग और तेज हुई। मजदूर संगठन ये समझ रखते थे की अगर मजदूर कम घंटे काम करेंगे तो बेरोजगारों को भी नौकरी मिलेगी। इसलिए आज तो 6 घंटे काम के दिन की मांग उठानी चाहिए, ताकि हमारे बेरोजगार युवा भी काम पर रखे जा सकें। नहीं तो मालिक तो यही चाहता है की कम से कम मजदूर अधिक से अधिक काम निपटा दें।

1877 में अमेरिका में रेल और इस्पात की बड़ी हड़ताल हुई, जिसमें हजारों मजदूरों ने कंपनियों और सरकार के खिलाफ आवाज उठाई। सरकार को सेना तक भेजनी पड़ी। इस हड़ताल ने श्रमिक आंदोलन को एक नई दिशा दी। इससे पहले, 1875

में, पेंसिल्वेनिया में एक जल्लाद कोयला बैरन ने खनिकों के संगठन को तोड़ने के लिए दस खनिकों को फांसी दे दी थी।

इसी दौरान एक नया संगठन, फेडरेशन, बना था जिसने 8 घंटे के कार्यदिवस की मांग को एक देश व्यापी नारा बना दिया। उन्होंने नाइट्स ऑफ लेबर, नाम के एक पुराने संगठन से भी समर्थन मांगा। 1885 में फेडरेशन के सम्मेलन में तय हुआ कि अगले साल 1 मई को सभी मजदूर काम पर नहीं जाएंगे। इसके लिए बढ़ई और सिगार बनाने वाले यूनियनों ने खास तैयारी की थी। इस आंदोलन से यूनियनों की सदस्यता में भी बढ़ोतरी हुई। नाइट्स ऑफ लेबर की सदस्यता तो 200,000 से बढ़कर 700,000 हो गई।

1885 और 1886 में अमेरिका में हड़तालों की संख्या बढ़ने से पता चलता है कि मजदूरों में जोश और रोष बढ़ रहा था। 1881-1884 के बीच हड़तालें औसतन 500 थीं, जिसमें 150,000 मजदूर शामिल होते थे। 1885 में ये बढ़कर 700 हो गईं और 250,000 मजदूर शामिल हुए। 1886 में तो हड़तालें दोगुनी से ज्यादा हो गईं, जिसमें 600,000 मजदूर शामिल हुए।

हड़ताल का मुख्य केंद्र शिकागो था, लेकिन न्यूयॉर्क, बाल्टीमोर, वाशिंगटन, मिल्वौकी, सिनसिनाटी, सेंट लुइस, पिट्सबर्ग, डेट्रायट जैसे शहर भी इसमें शामिल थे। इस आंदोलन में अकुशल और असंगठित मजदूर भी शामिल हुए और सहानुभूति हड़तालें भी हुईं। देश में एक विद्रोही भावना थी, और इतिहासकारों ने इसे "सामाजिक युद्ध" और "पूंजी के प्रति घृणा" के रूप में देखा। पहली मई काम हमेशा के लिए काम के घंटे कम करवाने के आंदोलन से जुड़ गया।

शिकागो स्ट्राइक

शिकागो स्ट्राइक, यानी 1886 में, शिकागो की हड़ताल, ये उस वक्त के मजदूरों का एक जबरदस्त आंदोलन था। मजदूरों ने काम के घंटे कम करवाने और काम की जगह और अपनी जिंदगी बेहतर बनाने के लिए  बड़ी ताकत और हिम्मत से आवाज उठाई।

इस हड़ताल की तैयारी में, पहले एक बड़ी रैली भी हुई जिसमें 25,000 मजदूर इकट्ठा हुए। फिर मई दिवस के दिन, यानी 1 मई को, शिकागो में बहुत सारे मजदूर सड़कों पर उतर आए और अपनी मांगों के लिए एकजुट होकर खड़े हुए।

उनकी एकता और जज्बा ऐसा था की मालिक और सरकारी अमले हैरान रह गए। फिर एक भीषण दमनकारी योजना बनाई गई। 3 और 4 मई को जो घटनाएं हुईं, उन्हें “हेमार्केट अफेयर” कहा जाता है। 4 मई को हेमार्केट स्क्वायर में एक प्रदर्शन हुआ, जो पिछले दिन हुए पुलिस के हमले के खिलाफ था। उस प्रदर्शन में पुलिस ने फिर हमला किया और एक बम फेंका गया, जिससे कई लोग मारे गए। इस घटना के बाद, कई मजदूर नेताओं को फांसी दी गई और कई को जेल में डाल दिया गया।

इस घटना के बाद, मजदूरों के खिलाफ मालिकों ने और भी सख्त कदम उठाए। लेकिन मजदूरों की ये हड़ताल इतिहास में एक मिसाल बन गई, और आज भी 1 मई को शहीद मजदूरों को याद किया जाता है।

मई दिवस अंतरराष्ट्रीय बन गया

"14 जुलाई 1889 को, बैस्टिल के गिरने की 100वीं सालगिरह पर, दुनिया भर के क्रांतिकारी मजदूर नेता पेरिस में एकत्र हुए। उनका उद्देश्य था एक बार फिर

मजदूरों का एक वैश्विक संगठन बनाना, जैसा कि कार्ल मार्क्स के नेतृत्व में 25 साल पहले किया था। इस बैठक में, जो द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय की नींव बनी, सदस्यों ने अमेरिकी प्रतिनिधियों से 1884-1886 के दौरान अमेरिका में 8 घंटे के कामकाजी दिन के लिए किए संघर्ष की पूरी कहानी सुनी। अमेरिकी मजदूरों की प्रेरणा से, पेरिस कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित किया की दुनिया के सभी देशों, हर काम की जगह, हर शहर, एक निश्चित दिन पर मजदूर  काम के घंटे कम करवाने की मांग को लेकर आंदोलन करें। यह प्रदर्शन पहले ही 1 मई 1890 को अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर द्वारा सेंट लुइस में दिसंबर 1888 में अपने सम्मेलन में तय किया जा चुका था, इसलिए इस दिन को अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन के लिए भी चुन लिया गया। इस प्रदर्शन को हर देश की स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप आयोजित किया जाना था। अब तक यूरोप के मजदूर संगठन दूसरा अंतर्राष्ट्रीय (Second International) को एक विचार गोष्ठी मंच के रूप में देखने के आदि थे। लेकिन इस आंदोलन ने अब इसे एक केन्द्रीकृत अंतरराष्ट्रीय संगठन का रूप दे दिया। पहला मई दिवस, 1 मई 1890 को कई यूरोपीय देशों और अमेरिका में एक साथ मनाया गया। जर्मनी में, विभिन्न औद्योगिक शहरों में मजदूरों ने मई दिवस मनाया,

जिसमें पुलिस के साथ गंभीर संघर्ष हुए। इसी तरह, अन्य यूरोपीय राजधानियों में भी प्रदर्शन हुए, जिनको सरकारों ने दबाने की कोशिश की। अमेरिका में, शिकागो और न्यूयॉर्क में प्रदर्शनों का खास महत्व था। हजारों लोगों ने 8 घंटे के कामकाजी दिन की मांग के समर्थन में परेड की और बड़ी खुली जगहों पर सामूहिक बैठकों-जलसों के साथ प्रदर्शन किए। 1891 में, ब्रसेल्स में, अगली कांग्रेस में, इंटरनेशनल ने 8 घंटे के कामकाजी दिन की मांग करने के लिए पहली मई के मूल उद्देश्य को एक प्रण के रूप में दोहराया।

अंतराष्ट्रीय मई दिवस पर एंगेलस

1 मई 1890 को मई दिवस के अवसर पर एंगेलस ने कम्युनिस्ट घोशानापत्र (Communist Manifesto) के नवीनतम संस्करण के लिए एक प्रस्तावना लिखी जिसमें उन्होंने पहले अंतरराष्ट्रीय मई दिवस के महत्व को रेखांकित करते हुए लिखते हैं, 'जब में ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ, अमेरिका के मजदूर शासक वर्ग के दमन तंत्र से अपनी जोर आजमाइश कर रहे हैं। वे पहली बार एक साझा उद्देश्य के लिए, एक

एकजुट सेना की तरह लड़ रहे हैं। ये दृश्य दुनिया भर के पूँजीपतियों और जमींदारों के दिल दहला रहा है। अगर आज मार्क्स यहाँ होते तो अपनी आँखों से देखते।

मई दिवस पर लेनिन

क्रांति से पहले के दिनों में लेनिन ने मई दिवस को प्रदर्शन और संघर्ष और मजदूरों के बीच क्रांतिकारी विचार पहुंचाने के दिन के रूप में देखा। जेल में रहते हुए, 1896 में, लेनिन ने सेंट पीटर्सबर्ग यूनियन ऑफ स्ट्रगल फॉर द लिबरेशन ऑफ द वर्किंग क्लास के पहले मार्क्सवादी राजनीतिक समूहों में से एक के लिए मई दिवस का एक पर्चा लिखा। पर्चे को तस्करी कर जेल से बाहर ले जाया गया और 40 कारखानों में श्रमिकों के बीच 2,000 मिमोग्राफ प्रतियां वितरित की गईं। यह एक बहुत छोटा सा पर्चा था, और लेनिन ने इसे बेहद सरल और सीधी शैली में लिखा था, ताकि श्रमिकों के बीच कम से कम पढ़े लोग इसे समझ सकें। इसे जारी करने में मदद करने वाले एक समकालीन ने लिखा, "जब एक महीने बाद 1896 की प्रसिद्ध कपड़ा हड़तालें शुरू हुईं, मजदूर हमसे कहते थे की उनको पहली प्रेरणा उस छोटे से मामूली मई दिवस के पर्चे से मिली।

लेनिन मई दिवस के महत्व को समझाते हुए लिखते हैं:

जब फ्रांस, इंग्लैंड, जर्मनी और अन्य देशों के मजदूर अपनी एकता के बल पर खड़े हुए, तो उन्होंने दुनिया को दिखाया कि संगठन की शक्ति से बड़ी कोई शक्ति नहीं। उन्होंने 19 अप्रैल को, जो रूसी कैलेंडर के अनुसार 1 मई था, श्रम का एक सामान्य अवकाश मनाया। उन्होंने अपने दमघोंटू कारखानों को पीछे छोड़, शहरों की मुख्य सड़कों पर मार्च किया, संगीत की धुनों पर कदम से कदम मिलाते हुए, अपने बिना फहराए बैनरों के साथ, और मालिकों को अपनी बढ़ती शक्ति का प्रदर्शन किया। वे बड़े जन प्रदर्शनों में इकट्ठा हुए, जहां भाषणों के माध्यम से पिछले वर्ष की जीतों का जश्न मनाया गया और आने वाले संघर्षों की योजनाएं बनाई गईं। हड़ताल की धमकी के चलते, मालिकों ने उस दिन कारखानों में श्रमिकों पर जुर्माना लगाने की हिम्मत नहीं की। इस दिन, श्रमिकों ने मालिकों को उनकी मुख्य मांग की याद दिलाई: "8 घंटे काम, 8 घंटे आराम, और 8 घंटे मनोरंजन"। और अब, दुनिया भर के मजदूर भी यही मांग कर रहे हैं।

रूसी क्रांतिकारी आंदोलन ने मई दिवस को एक नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की। लेनिन ने नवंबर 1900 में प्रकाशित 'मे डेज़ इन खार्कोव' की प्रस्तावना में लिखा कि रूसी श्रमिक नई सदी के पहले वर्ष के पहले मई का जश्न मनाएंगे, और यह समय है कि हम इन समारोहों को यथासंभव बड़ी संख्या में और जितना संभव हो उतने बड़े पैमाने पर आयोजित करें। लेनिन ने मई दिवस को रूसी जनता की राजनीतिक मुक्ति और सर्वहारा वर्ग के वर्ग विकास और समाजवाद के लिए उनके खुले संघर्ष के लिए एक रैली बिंदु माना।

लेनिन ने यह भी पूछा कि 1900 में खार्कोव में मई दिवस समारोह क्यों महत्वपूर्ण था, और उत्तर दिया कि इसमें मजदूरों की सामूहिक भागीदारी, सड़कों पर विशाल जन सभाएं, लाल झंडे फहराना, मांगों की प्रस्तुति और इन मांगों का क्रांतिकारी चरित्र शामिल था। उन्होंने खार्कोव पार्टी के नेताओं को फटकार लगाई कि वे 8 घंटे के दिन की मांगों को अन्य छोटी और विशुद्ध आर्थिक मांगों के साथ न मिलाएं, क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि मई दिवस का राजनीतिक चरित्र किसी भी तरह से धूमिल हो। उन्होंने लिखा कि 8 घंटे के दिन की मांग सभी देशों में सर्वहारा

वर्ग की सामान्य मांग है, और यह मांग सरकार के सामने पेश की जाती है, जो आज की पूरी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था का प्रतिनिधि है।

अंततः, मई दिवस का आगमन न केवल श्रमिकों के संघर्ष की गाथा है, बल्कि यह उनके अटूट साहस और एकजुटता का प्रतीक भी है। इस दिन को मनाने का अर्थ है उन सभी मजदूरों को याद करना जिन्होंने अपने अधिकारों के लिए अथक परिश्रम किया और अपने सपनों को साकार करने के लिए अनवरत संघर्ष किया। आइए हम सभी मिलकर इस दिन को उनके सम्मान में मनाएं और उनके द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियों को सराहें। यह दिन हमें यह भी याद दिलाता है कि संगठित होकर ही हम एक बेहतर और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना कर सकते हैं।

(साथी प्रांशु प्रकाश)

### 3. Mind is a Product and Reflection of Matter

*What is mental process?* God gifted or process of brain, related to the organism with its surrounding? We, the adherent of dialectical materialism, firmly believe that the matter is primary and the idea (in any form), which is the product of the brain, is secondary.

*Idealism* understands that idea (soul, mental function, mind, thought process, concept or whatever, including god in various forms) can exist without a living body, like that of human beings. That is, "idea" exists without matter and it's not a function of matter itself, like mind of a human being, in a highly sophisticated developed brain during centuries of developments in a favorable environment, where the earlier forms of humans interacted with the nature in a bid to survive and later various forms of production system. Idealism negates this process and takes idea as an absolute entity.

*Mental functions* are essentially functions of matter only, the brain. They are brain process of matter, albeit one of the most complicated or sophisticated matter, which evolved over hundreds of thousands of years. When brain perceives the action from the surroundings, it reacts, builds experiences, develops techniques to make surroundings friendly, so that it can use it with its limbs and tools, grows with the tools, techniques, with time it experiments along with the others in its group, passes through generations. Thus develops the conscious thinking, planning for the future, preserving the products and even for the forthcoming generations. One must appreciate that the development of brain, actions and reactions with the environment, is only possible in a group. That is, the brain's function is a social act. With the production it develops more and makes the production more fruitful.

Appearance of mind is tied up with the development of *CNS (Central Nervous System)*. Living bodies evolved the CNS followed by the brain. Now the elementary functions of mind started working, initially with sensations. And further development of brain (Cerebral cortex and its higher centers, found in men) was associated with higher functions of mind; thought. Thinking is the function performed by the brain.

*Ivan Pavlov* through various experiments and discoveries established that the CNS function is not merely to coordinate the various functions of the various parts of the body but also to interact with the material world out of the body and the surroundings. In this process, the animal or the human being use its limbs and sensory organs to work with the surroundings, survive and grow.

The simplest sort of reflex is when a stimulus affects sense organs causing a muscular response, constitutes a relation or connection between the animal (or a human being) and environment. This Pavlov calls unconditional reflex. But when develops through building up of temporary and variable connections, he calls it conditional reflex.

His experiment with dog is famous. When a dog was presented with food, the dog salivated in hope of getting food. Pavlov called this reflex of dog as simple or unconditional reflex. Later he started ringing bell just before the food arrived. And the dog now connected the sound of bell with the arrival of food and started salivating before the arrival of the food. Pavlov called this conditional reflex. He called it a development among the animals, more so among the men.

Mechanism of reflexes is found in brain, which exists between sensory and motor sensors; a natural one which has evolved through generations and the conditional ones which can be developed or destroyed. Sensory organs receive message and motor sensors send message after analyzing the message received. Pavlov called the brain, "the organ of the most complicated relations of the animal to the external world."

Growth of conditioned reflexes gives rise to the difference between the objective and subjective. Reason is difference between the receiver's (animal or man) awareness and the actual existing material condition.

Must note that much before awareness, things or material conditions existed. And now consciousness arises. It is part of, but much developed CNS, where the brain has learnt to react, after conditioned reflexes, aware of the surroundings and uses the limbs attached to the body.

Pavlov, further, said that the mental activity is the same as the higher nervous activity. He regarded speech as a “Second Signal” system. He referred to sensations, the “First Signals” of reality, which man possesses in common with the animals. Words, on the other hand, function as signals in a different way. They are not the first signals (sensations) but “signals of the first signals”. If a man needs water and looks around and finds it; this is “First Signal” through sensation with the help of the organ eye. But if he demands another man, “give me **water**”, this is “Signals of Signals” using word “Water” known to other man as well. Here “Second Signals” depends on the man’s intension, a planned one.

Mental life begins when an animal (or a man), as a result of formation of conditioned reflexes, begins to learn to connect one thing with another. In our example, the dog learns to connect smell of certain food with the food, in addition to the master or certain sound with the same or in later stage different food. Further development links him with the external world.

Here awareness starts. Awareness means, the animal by uses of smell, sound, sight, etcetera, discriminates certain features of its environment from the total environment, and responds to them. Here the dog picks out and eats it.

Further, awareness means attachments to the various features of the environment, which makes the dog aware of unwanted situations or threat perception. Next development is acquiring and accumulating experiences and the capacity to learn from experience. This is a new thing in life compared to the past for the sensory consciousness with the gradual evolution of the higher forms of life from the lower. And now sensation passes into perception.

By "perception" we denote the sensory awareness of complex objects in complex relations which, in the higher animals, is the product of their sensations. Perception is thus a development in use of the signal system of sensation. Maurice Cornforth

And thus, Pavlov **discarded the dualism**, that is, independent body and idea or mind. Words or speech is abstraction of the objects or concrete surrounding or material world. This leads to formation of concept and the exercise of thought, that is higher mental life, peculiar to the man. Both, the primary sensation signal and secondary, signals of signals, are interconnected and cannot exist independently. This is not appreciated by religion (idealist theory) but science, the materialist theory (dialectically). After the development, through hundreds of thousands of years, “Signals of signals”, speech, thought, concept are not independent of first signals, sensations or unconditional reflection, and even affect the former, the primary signals.

*Scientific method of studying our consciousness* is to study mind and the environment it lives in, as done by Marx and Engels. Marx wrote, “the idea is nothing else than the material world reflected by the human mind and translates into forms of thought.” (Marx and Engels in German Ideology) And Ivan Pavlov (14 Sep, 1849 – 27 Feb, 1936, who was referred above), Soviet Experimental Neurologist and physiologist, and is known for his discovery on “Classical Conditioning” did this. His works on

primary and secondary reflections of the surroundings to the mind of a living things (which we have been talking; and about the human being) are path breaking discoveries about the relation between matter and mind, in a scientific way.

Before, we sum up, in short the development of speech, language and thought, as Pavlov puts it: When the developing animal world reaches the stage of man, an extremely important addition was made to the mechanism of the higher nervous activity.... This is the first system of signals, common to man and the animals. But speech constitutes a second system of signal of reality, which is peculiarly ours, and is a signal of the first signals.

Lenin wrote, “Our consciousness in only an image of the external world, and it is obvious that an image cannot exist without the thing imaged, and the latter exists independently of that which images it.” ((Materialism and Empirio-Criticism)

In simple language, Stalin wrote, “Matter is primary, since it is the source of sensations, ideas, mind; and mind is secondary, derivative, since it is a reflection of matter.” (Dialectical and Historical Materialism)

Therefore, to repeat, in other words, consciousness does not exist independent of the material world. The reflections of the material world, surroundings and even at distance, enters our consciousness as reflections, in life process of the brain.

Thus, there does not exist two distinct identities, namely, spiritual and material world. But only the material world and material process. During material development, we have development of reflection and life brain process. Yes, reflection is mental, but that is not material, only reflection of matter.

Philosophically, which is scientifically as well, Lenin says, “The materialist elimination of the dualism of spirit and body consists in the assertion that spirit does not exist independently of the body, the spirit is secondary, a function of the brain, a reflection of the external world.” (Lenin in Materialism and Empirio-Criticism) He concludes, “The antithesis of matter and mind has absolute significance only within the bounds of a very limited field, exclusively within the bounds of the fundamental problem of what is to be regarded as primary and secondary. Beyond these bounds the relative character of this antithesis is indubitable.”

## 4. Cancer: By Dr Suman

My head bends in shame

When I throw away a case of cancer

In the name of referring up high for better care

The poor patient terrorised as he is

Is in deep grip of experimental state of care

That cribs him further

And drains him financially complete

He wanders in crowds of corridor for comfort

To find a sad satire of his fate

The doctors in cancer care centres are divine at work

They search the solution where solutions are scarce

This crab of cancer appears in sky as nebula of haphazard stars

This line of cancer even passes over earth surface

It appears within as a hard mole of unruly boy

And travels to the whole terrain of the land of flesh

To make it cancerous crabby and cry

A healthy lifestyle will prevent

Sunshine fruits and joy

And early care against carelessness by individual society and state

Will be the path of pushing this crab this cancer fully away.

## 5. गति ही जीवन है?

पर ऐसी गति? या फिर दुर्गति?

मौत से भी बुरे हालात हैं।

ऐसी गति मुबारक हो तुम्हें

श्रम शक्ति हथियाने वालों।

दूसरों के आसरे जीवन?

यहां अपना कुछ भी तो नहीं!

चंद सिक्के उछाल दिया

आपस में लड़वाने को

भीख मांगने लायक भी नहीं।

यह गति विकास नहीं

निश्चित मौत का रास्ता है।

बढ़ता जीडीपी कंगाली का रास्ता है|

क्या भाग्य मान शीश नवायें

या मिलकर लाल झंडा उठायें?

## 6. विधान पर दादा और पोते का संवाद

गाँव की चौपाल पर अलाव

सामयिक चर्चा का फैलाव

विषयों का तीव्र बहाव

मुद्दों पर सहमति-बिलगाव।

बुज़ुर्ग दद्दू और पोते के बीच संवाद-

दद्दू: ***मुहल्ले से

रमुआ *** को बुला लइओ,

कब से नाली बंद है...

पोता: आप मुहल्ले से पहले,

रमुआ के बाद...

जो शब्द जोड़कर बोल रहे हैं,

अब ग़ैर-क़ानूनी हैं,

असंवैधानिक हैं...

दद्दू: ज़्यादा पढ़-लिख लिए हो!

पोता: आपकी कृपा से।

( रामू (रमुआ) का आगमन )

दद्दू: ( जातिसूचक गाली देते हुए )

क्यों रे ***रमुआ!

तेरी इतनी औक़ात कि अब बुलावा भेजना पड़े!

पोता: दद्दू आप क़ानून तोड़ रहे हैं...

रमुआ की शिकायत पर,

संविधान आप दोनों के साथ इंसाफ़ कर सकता है...

दद्दू: जीना हराम कर दिया है तेरे संविधान ने...

पोता: हाँ, आप जैसों की चिढ़ को समझा जा सकता है। समानता और बंधुत्व का विचार आत्मसात् कर लेने में बुराई क्या है। हमारा संविधान ज़बानी जमा-ख़र्च नहीं है बल्कि लचीला और लिखित है।

दद्दू: हो गया तेरा लेक्चर!

पोता: एक सवाल और...

( दद्दू  से दूरी बनाते हुए )

गंदगी का आयोजन करनेवाला बड़ा होता है या उसे

साफ़  करनेवाला...?

(राम्  नाली की सफ़ाई में जुट गया और दद्दू पोते के पीछे छड़ी

लेकर दौड़े...)

© रवीन्द्र  सिंह यादव